गिरिजा कुमार माथुर ने आधुनिकता को उचित संदर्भ में किया परिभाषित

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

गिरिजा कुमार माथुर ने काव्य की सभी परंपराओं को तोड़ते हुए अपने वाक्य विधान पर विशेष ध्यान दिया। वे अनास्था के कवि नहीं थे और उन्होंने आधुनिकता को उचित संदर्भ में परिभाषित किया। यह कहना है प्रख्यात हिंदी आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी का। वह साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित गिरिजा कुमार माथुर जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर गिरिजा कुमार माथुर व्यक्तित्व और कृतित्व' विषयक पर आयोजित द्विदिवसीय संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने कहा कि वे अपनी कविता शब्दों से, लय से, छंद से तथा अन्य प्रतीकों को नए रूप में प्रस्तुत करके संभव करते हैं। हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि गिरिजा कुमार माथुर के काव्य में गीतात्मकता है। वे कविता में 'अनुभूति के ताप' को महत्तवपूर्ण मानते थे। उन्होंने गीतों को एक नया संस्कार दिया। उन्होंने हिंदी साहित्य में विज्ञान लेखन की शुरुआत तो की ही बल्कि उपेक्षित विधा काव्य-नाटक आदि का सृजन भी किया। अपने बीज वक्तव्य में अजय तिवारी ने उनकी कविता के तीन प्रमुख तत्तवों-रोमांटिकता, प्रकृति सौंदर्य और यर्थाथ वाद को विस्तार से व्याख्यायित किया। उन्होंने कहा कि बिना रोमांटिक हुए प्रगतिवादी भी नहीं हुआ जा सकता।